

उत्पाद व्यय ध्रौव्यात्मक सत्

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

इस विश्व के अन्दर जड़ एवं चेतन दो शाश्वत तत्व हैं। भगवान महावीर ने समवसरण में त्रिपदी का उपदेश दिया था। यही उत्पाद व्यय और ध्रौव्य है। उत्पाद और व्यय को पर्याय कहा जाता है। उत्पन्न होना और विनाश होना वस्तु का स्वभाव है। संसार में प्रतिक्षण परिवर्तन होता रहता है। सम्पूर्ण सृष्टि त्रिगुणात्मक है। सत्व, रज और तम तीन प्रकृति के गुण हैं। जड़ और चेतन से यह सृष्टि बनी हुई है। जो पिण्ड में है वही ब्रह्माण्ड में है। सत्व गुण सम्पन्न व्यक्ति धार्मिक और ऊर्ध्वगामी होती है वह माया मोह से दूर रहता है। रजस् गुण वाला व्यक्ति चंचल होता है। चंचल चित्त वाला व्यक्ति विक्षिप्त होता है। उसका मन इधर-उधर भागता रहता है। तमोगुण वाला व्यक्ति अज्ञानी होता है। यह मूढ़ प्रकृति का होता है। सम्पूर्ण प्रकृति में यह गुण पाया जाता है।

भगवान महावीर क्षीण मोह की अवस्था में अन्तर्मुहूर्त में केवलज्ञानी हो गये थे। उनकी वाणी आप्त वाणी थी। उन्होंने उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य को समझाया है। सम्पूर्ण सृष्टि पक्ष-विपक्ष और सपक्ष की त्रिपदी है। विरोध में समन्वय होना चाहिए। विरोध विरोध के लिये नहीं बल्कि विरोध विकास के लिए होना चाहिए। सभी द्रव्यों में उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य होता रहता है। सोना द्रव्य है इसमें उत्पाद, व्यय होने से यह अनेक रूप धारण कर लेता है। आत्मा में भी उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य होता रहता है। दर्शन और ज्ञान आत्मा में घटित होता है। ज्ञान में जाने वाला आत्मा और दर्शन में जाने वाला आत्मा एक ही है। एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय वाले जीव इन सभी में एक ही आत्म तत्त्व ध्रौव्य रूप में रहता है। चेतना अविनाशी है।

जड़ और चेतन मिश्र रूप में शरीर कहलाते हैं। ज्ञान से दर्शन और दर्शन से ज्ञान चलता रहता है। इनकी सत्ता बनी रहती है। मन क्या है? मनन या चिंतन करना मन का कार्य है। मन को चित्त भी कहा जाता है। मानव के शरीर में पांच इंद्रियां होती हैं। पांचों इंद्रियां

अपने-अपने विषयों को ग्रहण करती है। मन जिस इन्द्रिय के साथ जुड़ता है उसी विषय का ज्ञान प्राप्त होता है। मन का प्रमुख आधार है चेतना इसी आधार पर मन तीन स्तर पर कार्य करता है— चेतन अवचेतन और अचेतन।

चेतन मन, मन का वह स्तर है जिसमें व्यक्ति को अपनी क्रियाओं का वर्तमान समय में ज्ञान रहता है। चेतन मन में विचार या भावधारा का प्रवाह निरंतर बहता रहता है। मन के इस स्तर को अवधान का केन्द्र या चेतन का केन्द्र कहते हैं। चेतना मन की क्रियाओं का संचालन तथा नियंत्रण वास्तविकता के अनुसार करता है। ये क्रियाएं वातावरण के द्वारा प्रवाहित होती हैं। चेतन मन के तीन पक्ष हैं— ज्ञानात्मक, भावत्माक और क्रियात्मक मन की ये तीनों मानसिक क्रियाएं मिलकर कार्य करती हैं। कभी किसी मानसिक प्रक्रिया की प्रधानता रहती है तो कभी किसी की। अवचेतन या अर्धचेतन मन चेतना का वह स्तर है जिसकी क्रियाएं ध्यान की सीमा से परे होते हुए भी प्रयत्न करने पर ध्यान केन्द्र में लायी जा सकती हैं। अवचेतन मन की क्रियाएं न तो पूर्ण रूप से व्यक्त होती हैं न अव्यक्त। प्रयत्न करने पर वे व्यक्त या अव्यक्त दोनों हो सकते हैं। अवचेतन मन कि क्रियाएं बिना किसी प्रतिबंध के चेतन मन में आ जाती हैं।

अचेतन मन चेतना का वह भाग है जिसके बारे में व्यक्ति प्रयास करे तो भी उसे ज्ञात नहीं होता। इसे चेतना की गहराई का भी नाम दिया जाता है। व्यक्ति अपने जीवनकाल में भिन्न-भिन्न इच्छाओं का दमन करता है। वे इच्छाएं चेतन मन से निकलकर अचेतन मन में प्रवेश कर वहीं सुरक्षित रहती हैं। इन्हीं दमित इच्छाओं से चेतन मन का विकास भी होता है। हमारा अचेतन मन दमित आवेगों, भूले हुए अनुभवों, इच्छाओं, आवश्यकताओं, संवेगों एवं लालशाओं का भंडार है। जो कि अभिव्यक्त होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं कर पाता। अर्द्धचेतन मन की क्रियाएं न तो पूर्ण रूप से व्यक्त होती हैं और न अव्यक्त। इन पर कोई प्रतिबन्ध काम नहीं करता। सभी क्रियाएं चेतन मन के समान ही होती हैं। इनको व्यक्ति ज्ञात कर सकता है। अचेतन मन की क्रियाएं पूर्णतया अव्यक्त होती हैं। उन पर प्रतिबंधक या नियंत्रण होता है। तथा अप्रत्यक्ष रूप से बदले हुए स्वरूप में चेतन मन में प्रवेश करती हैं। अचेतन मन की

क्रियाएं वासना जन्य होती है। मन या चित्त की अनेक वृत्तियां होती है। व्यक्तित्व इन्हीं वृत्तियों के आधार पर कार्य करता है।

हमारे स्थूल व्यक्तित्व के तीन घटक है— शरीर, मन और वाणी। शरीर स्थूल और दृश्य है। प्रवृत्ति दूसरा श्रोत है मन इसके द्वारा चिन्तन स्मृति और कल्पना की प्रक्रियाएं होती है। शरीर की प्रवृत्तियां निरंतर जारी रहती है। मन की प्रवृत्ति कभी—कभी रुकती है। हम मन का श्रम तो करते है किन्तु उसको विश्राम देना नहीं जानते हैं। हम चिन्तन करना जानते हैं किन्तु अचिन्तन की बात नहीं जानते, चिन्तन से मुक्त होना नहीं जानते। मन को विश्राम देना भी संभव है जब हम वर्तमान में रहना सीख जायें। उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य के माध्यम से यह सृष्टि चल रही है। सत् स्थाई नहीं है। बिना गुण और परिणाम के सत् की कल्पना नहीं की जा सकती।